जिन गुरुओं ने गढ़ा व्यक्तित्व, उन्हीं के हाथों हुआ पुस्तकों के नए संस्करण का विमोचन

उज्जैन। कहा जाता है छात्र तो स्कूल की पढ़ाई पूरी कर आगे की पढ़ाई के लिये अन्य शिक्षण संस्थानों में चले जाते हैं लेकिन कुम्हार की तरह शिक्षक उसी स्कूल में अगली पीढ़ी को संस्कारित-शिक्षित करने, छात्रों की नई बैच को गढ़ने के लिये निष्ठा से लगे रहते हैं। बहुत कम छात्र होते हैं जो अपने इन शिक्षकों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करना याद रख पाते हैं। जिस सम्मान के साथ शिक्षकों को मंच पर आमंत्रित करने के साथ वे हर शिक्षक के चरण स्पर्श कर रही थीं, इन शिक्षकों की बॉडी लैंग्वेज से भी अहसास हो रहा था कि अपनी इस पूर्व छात्रा के प्रति उनके मन में प्रेम का सागर हिलोरे ले रहा है। अपर्णा ने 2015, 2016 और 2018 के दौरान अलग अलग विषयों पर जो तीन किताबें लिखी थीं। उन्हीं किताबों के सेकंड एडिशन को 'श्री रत्नाज' के नाम से करीब दस साल बाद अपने इसी स्कूल में विमोचित कराया।लेखिका को अपने लिखे पर इसलिये गर्व था कि इन तीन में से एक किताब को बेस्ट सेलर के साथ गोल्डन बुक का खिताब भी मिल चुका है।

सेंट मेरी कॉन्वेंट स्कूल में हुआ शिक्षकों का सम्मान

पिता ने किया शिक्षकों का सम्मान

अपने उन शिक्षकों को वे एक-एक कर आदर सहित मंच पर बुला रही थीं। उनके पिता नरेंद्र मोहन शर्मा ने स्कूल के टीचिंग स्टॉफ रीटा चौधरी, अमिताभ त्रिवेदी, पीजे आशिको, प्रिंसिपल सिस्टर सरिता, वाइस प्रिंसिपल सिस्टर प्रिया का सम्मान किया। जिन तीन किताबों का इस मंच से सेकंड एडिशन लॉच किया गया उस अवसर के मुख्य अतिथि जूना अखाड़ा के महामंडलेश्वर शैलेषानंद गिरी (ध्यानश्री) भी इसी स्कूल के तब छात्र थे जब अपर्णा भी पढ़ रही थीं। एक किताब में लेखिका ने शैलेषानंद पर भी एक चैप्टर लिखा है।

गधा आइने में शेर बन जाता है- शैलेषानंद

समारोह में मौजूद स्कूली बच्चो को गधा और आईना की रोचक कथा के माध्यम से मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर शैलेषानंद गिरी ने समझाया कि अधकचरे ज्ञान से गधा आईने में अपने आप को कभी शेर तो कभी कुत्ता समझने लगता है। पूरा ज्ञान तो उसे निष्ठा-समर्पण से ही प्राप्त होता है। जब व्यक्ति ज्ञान से परिपूर्ण हो जाता है तो उसे अपनी कमियों के साथ दूसरों की अच्छाइयां भी समझ आने लगती हैं। अपने में सुधार के लिये हम दूसरों की कमजोरियों, उसकी अच्छाइयों से भी सीख सकते हैं।।

वन मेन आर्मी की तरह पूरे समारोह की तैयारी से लेकर संचालन करने तक जब अपर्णा पुरानी यादों से जुड़े किस्से सुनाती जा रही थीं तब लग रहा था हॉल में तीन दशक पुरानी यादें हवा के झोंकों की तरह मंडरा रही हैं। अपने सम्मान से अभिभूत

रीटा चौधरी मैडम ने पिता-पुत्री का धन्यवाद व्यक्त करने के साथ ही कहा अपर्णा बाएं हाथ से तेजी से लिखती थी । उसने स्कॉलरशिप शुरु कर छात्राओं में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ ही उन्हें ऊंची उड़ान के अवसर भी उपलब्ध कराए। स्कॉलरशिप शुरु की। आशिको सर का कहना था हम जब किसी को एक किताब भेंट करते हैं तो उसके जीवन को और बेहतर बनाने की पहल करते हैं। अपर्णा तुम्हारे काम पर हमें गर्व है।

त्रिवेदी सर का कहना था एचआर विषय से जुड़ी जो किताब लिखी है अमूमन कॉरपोरेट में इंटरव्यू के दौरान इसी तरह के प्रश्नपूछे जाते हैं। यह किताब बेहद मददगार साबित हुई है। किताबों की यह सफलता ही है कि सेकंड एडिशन लॉच हुआ है। में लिखा है वैसे ही प्रशन इंटरव्यू में पूछे गए। पहले के बाद दूसरे लॉच में भी शामिल हुआ।

सिस्टर सरिता और प्रिया ने पूर्व छात्रा के काम के साथ ही अपनी बुआ श्रीमती मोहिनी देवी व्यास और मां उषा शर्मा की स्मृति में उत्तर प्रदेश में विद्यार्थियों के लिये स्कॉलरशिप शुरु करने की सराहना की।

आज इंफर्मेशन तो खूब है लेकिन नॉलेज किताबों से मिलेगा : नरेंद्र मोहन शर्मा

नरेंद्र शर्मा ने संबोधन में कहा बड़ी बेटी की तरह अपर्णा साइंस की स्टूडेंट रहीं। इसे भी मैं डॉक्टर बनाना चाहता था लेकिन भोपाल में आर्टस सब्जेक्ट ले लिया। एचआर संबंधी किताब में इसने ह्यूमन नैचर पर बहुत बारीकी से लिखा है। ।इसी तरह एक अन्य किताब में इसने सामान्य लोगों की कहानी से समझाया है कि इनके जीवन-कार्य व्यवहार से आप क्या सीख सकते हैं। 15 चैप्टर वाली इस किताब की प्रस्तावना पदमभूषण डॉ देवी शेट्टी ने लिखी है। गोल्डन अवार्ड से सम्मानित है यह किताब। एचआर वाली किताब मैनेजमेंट-स्टॉफ दोनों के काम की है। वनस्थली विद्यापीठ, बॉम्बे यूनिवर्सिटी आदि में रिफरेंस बुक में लगी हुई है। अच्छे बीज को खाद-हवा-पानी नहीं मिले तो वो अच्छा पेड़ नहीं बन सकता। ऐसे ही सेंट मेरी जैसा स्कूल और ऐसे गुरुजन ना हो तो बच्चों की प्रतिभा विकसित नहीं होगी। उन्होंने कहा आज इंफर्मेशन तो खूब है लेकिन नॉलेज किताबों से मिलेगा। किताबें पढ़ना मत छोड़िए। एक चतुर व्यक्ति हमेशा समस्या का समाधान कर सकता है। किंतु एक बुद्धिमान व्यक्ति उससे बचने का रास्ता खोज लेता है। प्रिंसिपल सरिता ने इस आत्मीय आयोजन के लिए स्कूल की तरफ से अपर्णा शर्मा परिवार का आभार।